लोंजाइनस का उदात्त –सिद्धांत

डॉ. पूजा (स.आ.)

हिन्दी विभाग

जैन कन्या पाठशाला (पी.जी.) कॉलेज

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

- पाश्चात्यसाहित्य शास्त्र के इतिहास में लोंजाइनस एक अविस्मरणीय हस्ताक्षर है, जिनकी एकमात्र विश्वविख्यात रचना 'पेरिइप्सुस'है। पेरिइप्सुस(1954) का अनुवाद उदात्त के विषय में शीर्षक से हुआ है, जिसमें ' उदात्त सिद्धांत' का विवेचन है। यह रचना अरस्तू के काव्यशास्त्र 'पोएटिक्स'के समान पाश्चात्य काव्यशास्त्र का एक मील का पत्थर है।
- **उदात्त की प्रेरणा और उद्देश्य-**
- लोंजाइनस ने उदाते की प्रेरणा कैसिलियस के निबंध उदात से ग्रहण की थीऔर इसी आधार पर अपने उदात्त सिद्धांत का प्रवर्तन किया था।
- लोंजाइनस ने उदात्तको काव्य की आत्मा मानते हुए कहां है कि अभिव्यंजना की श्रेष्ठता और विशिष्टता का नाम उदात्ता है जिसके कारण महानतम कवि एवं इतिहास वेता गौरव प्राप्त कर अमर यश के भागी बने हैं।

उदात्त की परिभाषा-

- उदात्त क्या है? इस संबंध में लोंजाइनस चार प्रमुख बातें कहीं हैं उनके अनुसार-
- १ उदात्त अभिव्यंजना का प्रकर्ष और वैशिष्ट्ए है।
- २ उदात्त में अभिव्यक्ति की उच्चता श्रोता के तर्कका समाधान नहीं करती बल्कि उसे पूर्णता सम्मोहित कर लेती है।
- ३ उदात्त का कार्य अनुनयन नहीं, सम्मोहन है, जो यदा-कदा नहीं बल्कि सदा सबको समानता में सम्मोहित करता है।
- ४ उदात्त सर्जनात्मक या रचनात्मक कौशल से भिन्न तत्व है, जिसका प्रभाव आकस्मिक बिजली की कौंध के समान होता है, जिसके अलौकिक आलोक से कथ्य चमत्कृत हो उठता है।
- **उदाते का स्वरूप-**उदात्त एक भाव ,एक विचार, शैली के गुण के साथ-साथ कलाकार के व्यक्तित्व का भी अभिन्नगुण है। कलाकार का व्यक्तित्व उदात्त से युक्त होकर उदात्तके भाव उदात्त विचार को समाहित कर उदात्त शैली के माध्यम से रचना में अभिव्यक्त होता है और पाठक की आत्मा को झंकृत करने के साथ-साथ अलौकिक आनंद की सृष्टि करता है।

उदात्त का मूल आधार-लोंजाइनस की दृष्टि में उदात्त का मूल आधार केवल प्रतिभा केवल अभ्यास ही नहीं बल्कि इसका आधार व्यक्ति के उदात्त व्यक्तित्व से भी है।

उदात्त के स्रोत

- लौंजाइनस मैं उदात्त के पांच स्रोतों की चर्चा की है-
- १ **उदात्त विचार-काव्यगत** औदात्य के स्रोतों में सर्वप्रथम एवं सर्वोच्च स्रोत उदात्तविचारहै,जिसे लौंजाइनस आत्मा की भव्यता कहते हैं। लौंजाइनस के अनुसार उदात्त महान आत्मा की प्रतिध्वनि है।
- **२ भावों का उदात्तचित्रण-लौंजाइनस** कहते हैं-मेरे विचार से जो आवेग उन्माद, उत्साह के साथ फूट पड़ता और एक प्रकार से वक्ता के शब्दों को विक्षेप से परिपूर्ण कर देता है, उसके स्थान –स्थान व्यक्त होने से स्वर में जैसा औदात्य आता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।
- **३ अलंकार नियोजन-**लौंजाइनस ने काव्य में उदात्त तत्व के लिए विस्तारणा, प्रश्न अलंकार, व्यतिक्रम, उपमा, रूपक इत्यादि अलंकारों को महत्वपूर्ण माना है।
- ४ **उत्कृष्ट** भाषा-लौंजाइनस उदात्त का चतुर्थ स्रोत उत्कृष्ट भाषा है। वस्तुतः उदात्त विचार, भाव इत्यादि की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है इसीलिए उदात्तका मूल आधार भाषा है।
- **५ गरिमामय रचना विधान-लौजाइनस** उदात्त का पांचवां व अंतिम स्रोत गरिमामय रचना विधान को मानते हैं।
- इस प्रकार लौंजाइनस का औदात्य गरिमामय विषय वस्तु उदात्त धारणाओं , सहज समुचित अलंकार योजना, उत्कृष्ट भव्य शब्दावली के समुचित, प्रभावशाली एवं कलापूर्ण संगुफन की परिणति है।

उदात्त के बाधक तत्व-

- १ शब्दा आडंबर-इसे लौंजाइनस ने जलोदर रोग जैसी प्रवृत्ति कहा है।
- २ बाले यता-इसका अर्थ बचकाना या संस्थापन है।
- ३-भाव आडंबर-अन अपेक्षित स्थानों पर भावावेग का प्रदर्शन।
- **उदात्त सिद्धांत का मूल्यांकन-**समग्र आधार पर कहा जा सकता है कि उदात्त विचार , उदात्त भा समुचित अलंकार योजना उत्कृष्ट भाषा और गरिमामय रचना विधान औदात्य के विधायक तत्व है। लोंजाइनस ने अरस्तू की तुलना में काव्य में कवि के उदात्त व्यक्तित्व की जो प्रतिष्ठा की है उसका महत्व ही गले,कैरिट जैसे सौंदर्य शास्त्रीयों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। लोंजाइनस ने औदात्य सिद्धांत के द्वारा जिस आत्मा के उन्नयन स्थाई अनिवर्चनीय आनंद एवं महत् विचारों उद्भाव ना इत्यादि की स्थापना की वह उन्हें एक गंभीर मौलिक चिंतक एवं महान व्याख्याता के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

- **धन्यवाद**